

अर्थवाह्यता-प्रतिक्रिया

अ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ. जीवन में हँसते – बोलते रहना क्यों ज़रूरी है?

उत्तर:

मानव जीवन में सुख – दुःख दोनों रहते हैं। हर मानव सुखमय जीवन ही बिताना चाहता है। हँसते रहनेवाले का दिल स्वच्छ और शांत रहता है। हँसते बोलनेवाले के सभी मित्र बनते हैं। सबसे हँसते प्रेम पूर्वक बरताव करने से मानव सुखी बन सकता है। चाहे कितना भी कष्ट का सामना करना पड़े दिल को तसल्ली पहुँचाने हँसते रहना और हँसते बोलना है। यही एक उत्तम साधन है। जीवन सुखमय बनाने हमें सदा हँसते हुए बोलना चाहिए। इससे मानसिक शांति मिलती है।

आ. खुशहाल जीवन की क्या विशेषता होती है?

उत्तर:

मानव जीवन सुख-दुःख का मिश्रण है। हर एक मानव खुशहाल जीवन ही बिताना चाहता है। मानव को स्वस्थ, निडर, साहसी, निर्लोभ, सहृदयी, कार्यशील होकर योग्य काम करते रहने से ही खुशी मिलती है। उसका जीवन शुखहाल होता है। दूसरों को सुख पहुँचाते स्वयं खुश रहना, खुशहाल जीवन की मुख्य विशेषता है। अपने चारों ओर के लोगों और प्राणियों की भलाई करते, धर्म परायण होकर, कर्तव्यों का पालन करते हुए सुखमय जीवन बिताना ही खुशहाल जीवन की विशेषता है।

इ. 'प्रसन्न व्यक्ति कभी दुःखी नहीं होता' इस पर अपने विचार बताइए।

उत्तर:

मानव जीवन में सुख और दुःख दोनों रहते हैं। अपने अच्छे गुण और दूसरों से मिल जुलकर रहने से मानव प्रसन्न रह सकता है। निर्मल हृदय, परोपकार भावना, सुख पहुँचाना, अन्याय न करना, निस्वार्थ भावना आदि गुणों से मानव प्रसन्न रह सकता है। प्रसन्न व्यक्ति सुख-दुःख दोनों को समान दृष्टि से देखता है। दुःख के बिना सुख मिलता ही नहीं है। इस तत्व को समझकर सुखी जीवन बितानेवाला ही महान होता है। वह कभी दुःखी नहीं होता।

आ) कविता पढ़कर नीचे दिये गये अभ्यास पूरे कीजिए।

इन पंक्तियों का उचित क्रम बताइए।

1. उत्साह उमंग निरंतर रहते मेरे जीवन में। (3)
2. उल्लास विजय का हँसता मेरे मतवाले मन से। (4)

3. जग है असार सुनती हूँ मुझको सुख – सार दिखाता। (1)

4. मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता। (2)

नीचे दी गयीं पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 1.

हँस-हँस जीवन में कैसे करती है चिंता क्रीडा?

उत्तर:

जिसका जीवन हँसी-हँसी से गुज़रता है उनके जीवन में चिंता की क्रीडा नहीं होती ।

प्रश्न 2.

मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता ।

उत्तर:

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान जी के जीवन में जीवन सुख सार जैसा है । इसलिए उनकी आँखों के आगे सुख का सागर ही लहराता है ।

प्रश्न 3.

सुख भरे सुनहरे बादल रहते हैं मुझको घेरे ।

उत्तर:

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहानजी के सुख भरे जीवन में हमेशा सुनहरे बादल घेरे रहते हैं ।

प्रश्न 4.

विश्वास, प्रेम, साहस जीवन के साथी मेरे।।

उत्तर:

सुभद्रा कुमारी चौहान जी के सुखमय जीवन में विश्वास, प्रेम, साहस आदि जीवन के साथी हैं ।

नीचे दिया गया पद्यांश पढ़कर इसका भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

बार-बार आती है मुझको,

मधुर याद बचपन तेरी।

गया ले गया जीवन की,

सबसे मस्त खुशी मेरी ॥

उत्तर:

यह पद्यांश कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता “मेरा बचपन” का पद्य है। कवयित्री अपने मधुरमय बचपन को याद करती कहती है।

हे बचपन ! मुझे तुम्हारी याद बार – बार आती है। क्योंकि बचपन मेरा सुखदायी और भुला देनेवाला नहीं। खेलते-कूदते, बाधा के बिना, खुशी से मैं ने अपना बचपन बिताया। बचपन के दिन जीवन में फिर कभी नहीं आते । अब मैं बड़ी हो गयी हूँ। इससे मेरे जीवन की मस्त खुशी मुझसे दूर हो गयी है।

अभिव्यक्ति- सजनात्मकता

अ) पाठ के आधार पर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1.

कवयित्री ने जीवन में हँसने को क्यों महत्व दिया है?

उत्तर:

कवयित्री मानव जीवन का महत्व खूब जानने वाली हैं । अपना जीवन सुखमय बना लेने आवश्यक विषय सीख लिये हैं। वे हैं – बाधाओं को हँसते सहना, संसार और सब लोगों को सुख पहुँचाने वाले समझना। उत्साह, उमंग के साथ हर पल बिताना, आशावान होकर असफलताओं से दुःखी न होते, विश्वास, प्रेम, साहस आदि गुणों से जीवन सुखमय बना लेना आदि। इस तरह उसने अपना जीवन सुखदायी बना लिया है।

प्रश्न 2.

आपको यह संसार कैसा लगता है?

उत्तर:

मैं ने सुन लिया है कि यह संसार तो सारहीन और अशाश्वत है। लेकिन मैं तो विश्वास, प्रेम, धैर्य से सुख की आशा में ही रहती हूँ। निराश न होते हुए आशावान होकर जीवन बिताते रहने के कारण हमें यह संसार सुखदायी ही लगता है।

प्रश्न 3.

अपने जीवन को खुशहाल कैसे बनाया जा सकता है?

उत्तर:

मैं अपने जीवन को सदा हँसते हुए साहस, प्यार, विश्वास, आदि अच्छे गुणों से बाधाओं और कष्टों की परवाह न करते धीरज के साथ जीवन के प्रति आशा से रहते खुशहाल बनाता हूँ।

प्रश्न 4.

कवयित्री ने जीवन का साथी किसे बताया है और क्यों?

उत्तर:

मानव जीवन अति मूल्यवान है। सच्चा मानव दुःखों की परवाह न करते सुख की आशा में ही जीवन बिताता है। इसलिए कवयित्री विश्वास, प्रेम, साहस, उत्साह, उल्लास आदि महान गुणों से

रहती थी। उन्होंने तो आशा को ही अपना साथी बना लिया। क्योंकि जीवन तो आशा से ही गुज़ारा जाता है।

आ) 'मेरा जीवन' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(या)

सुभद्राकुमारी चौहान जी 'मेरा जीवन' कविता के माध्यम से हमें कौन – सी प्रेरणा देना चाहती है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

"मेरा जीवन" नामक कविता की कवयित्री हैं श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान। इस कविता में आप लक्ष्य की राह में खुशहाल, सुखी जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान जी कहती हैं कि मैं ने हँसना सीखा है। मैं रोना नहीं जानती। मैं ने अपने जीवन में पल-पल पर सोने को बरसते देखा है। मुझे आज तक यह पता नहीं कि पीडा कैसी होती है?

मैं ने इस जग के बारे में सुना कि यह जग असार है। लेकिन मुझे सुख-सार दिखाता है। मेरी आँखों के सामने सुख सागर लहराता है। मेरे जीवन में उत्साह, उमंग निरंतर रहते हैं। मेरे मतवाले मन में उल्लास और विजय हँसते रहते हैं।

मेरे जीवन को आशा प्रतिक्षण आलोकित करती है। मेरी असफलता के धन स्वर्ण सूत्र से वलयित है। मुझे हमेशा सुख भरे सुनहरे बादल घेरे रहते हैं। मेरे जीवन के साथी विश्वास, प्रेम और साहस ही हैं।

इ) इस कविता को "आत्मकथा" के रूप में लिखिए।

उत्तर:

मेरा जीवन :

मैं ने हँसना सीखा है। मैं रोना नहीं जानती है। मेरे जीवन में हर क्षण सोना बरसा करता है। "पीडा कैसी होती है"? – इसे मैं अब तक जान न पाई हूँ। मेरे हँस-हँस जीवन में चिंता क्रीडा कैसी करती है?

मैं इस जग के बारे में असार सुनती हूँ। लेकिन यह जग मुझे सुख – सार दिखाता है। सदा मेरे आँखों के सामने सुख का सागर ही लहराता है। मेरे जीवन में उत्साह और उमंग सदा (निरंतर) रहते हैं। मेरे मतवाले मन में उल्लास और विजय हँसते रहते हैं।

मेरे जीवन को प्रतिक्षण आशा से आलोकित करती रहती हूँ। हमेशा मुझे सुख भरे सुनहरे बादल घेरे रहते हैं। मेरे जीवन का साथी हैं – विश्वास, प्रेम और साहस।

ई) विश्वास, प्रेम और साहस का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। इस पर अपने विचार लिखिए।
उत्तर:

विश्वास :

विश्वास से हमारा जीवन सफल बनता है। हर एक आदमी को अपने पर, बंधु – बांधवों पर मित्रों पर अवश्य विश्वास रखना चाहिए। विश्वास के बिना हम निश्चिंता से जीवित नहीं रह सकते। हर काम पर हमें ज़रूर विश्वास रहना चाहिए। विश्वास हमें जीवन में आगे बढ़ाता है। अविश्वास तो हमारे जीवन का रोकड़ा है।

प्रेम :

हमारे जीवन में और एक आवश्यक अंश या अंग प्रेम ही है। प्रेम के बिना भी हम जीवित नहीं रह सकते। हर एक को अपने ऊपर, अपने परिजनों के ऊपर, अपने परिवार के ऊपर, अपने पुत्र तथा पत्नी आदि के ऊपर प्रेम अवश्य रहता है। प्रेम के बिना जीवन असार तथा सून लगता है। प्रेम के सहारे हम कुछ कर सकते हैं। प्रेम के बिना कुछ नहीं कर सकते। प्रेम जीवन देता है। प्रेम दूसरों को जिलाता है।

साहस :

हमारे जीवन में और एक आवश्यक अंश साहस है। यह जीवन में महत्वपूर्ण स्थान पाता है। साहस हमें आगे बढ़ाता है। साहसवाला हर एक काम पूरा करके विजय पाता है। साहस के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। साहस के सहारे ही हम हर क्षेत्र में जीत पा सकेंगे। इसीलिए कहा गया है कि साहस और धैर्य ही लक्ष्मी है।

भाषा की बात

अ) निम्न शब्दों पर ध्यान दीजिए।

सुख का सार	-	सुख सार
बिना किसी अंतर के	-	निरंतर
हर एक क्षण	-	प्रतिक्षण
सुख और दुख	-	सुख-दुख
जो कानों को मधुर लगे-		कर्णमधुर

इस तरह दो या उससे अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।
इस तरह दो या उससे अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

अव्ययीभाव समास	-	प्रतिक्षण, निरंतर
कर्मधारय समास	-	स्वर्णसूत्र, सुनहले बादल
तत्पुरुष समास	-	सुखसार, सुखसागर
द्वंद्व समास	-	सुख-दुख, आशा-निराशा
द्विगु समास	-	चौराहा, त्रिभुज
बहुव्रीहि समास	-	गोपाल, पंकज

नीचे दिये गये शब्दों को सामासिक रूप में बताइए।

माता और पिता	घर-घर	राजा का भवन
कीचड़ में जन्म लेने वाला	तीन भुजाएँ	अग्नि जैसा क्रोध

उत्तर:

माता और पिता	-	माता-पिता	-	द्वंद्व समास
कीचड़ में जन्म लेनेवाला	-	पंकज	-	कर्मधारय समास
घर-घर	-	हर घर / प्रति घर	-	द्विगु समास
तीन भुजाएँ	-	त्रिभुज	-	द्विगु समास
राजा का भवन	-	राजभवन	-	तत्पुरुष समास
अग्नि जैसा क्रोध	-	क्रोधाग्नि	-	कर्मधारय समास